ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 67 अंक 5 जनवरी 2020 पौष 2067 वार्षिक मूल्य 150 रु०

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

जन्म - 23.01.1897

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुन: भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

-व्यवस्थापक

वर्ष :67 अंक : 5
जनवरी 2020 विक्रमाब्द 2076
दयानन्दाब्द 195 कलिसंवत् 5119
सृष्टिसंवत्-1, 96, 08, 53, 119

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वैदिक विनय	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	5
4.	वाणी का तप	11
5.	महर्षि दयानन्द व मैथिली...	13
6.	भगौडे प्रेमी जोडों...	15
7.	आर्यसमाज की उन्नति के...	17
8.	आयुर्वेदिक योग उपचार	20
9.	साहित्य समीक्षा	23

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

वैदिक विनय

ई जानश्चितमारु क्षदग्निं,
नाकस्य पृष्ठाद् दिवमुत्यपतिष्यन्।
तस्मै प्रभाति नभसो ज्योतिषीमान्,
स्वर्गः पन्थाः सुकृते देवयानः।।
अथर्व० १८.४.१४।।

विनय

क्या तुम देवत्व पाना चाहते हो? उस प्रसिद्ध बड़ी महिमा वाले 'देवयान' मार्ग के पथिक बनना चाहते हो? परन्तु शायद तुम उस देवों के चलने के मार्ग को अभी समझ ही न सकोगे। बात यह है कि संसार में दो मार्ग चल रहे हैं। एक मार्ग से संसार के लोग भोग में, प्रकृति में प्रवृत्त हो रहे हैं-विश्व के एक से एक ऊँचे सुखभोग पाने के लिय दृढतापूर्वक अग्रसर हो रहे हैं। दूसरे मार्ग वाले भोगों से निवृत्त होकर अपवर्ग की तरफ, आत्मा की तरफ जा रहे हैं। ये क्रमशः पितृयाण और देवयाण हैं। इन दोनों मार्गों द्वारा प्रकृति पुरुष के भोग और अपवर्ग नामक दोनों अर्थो को पूरा कर रही है। परन्तु प्रकृत्ति और निवृत्ति दोनों एक साथ कैसे हो सकती हैं? इसलिए जो लोग भोगों में विश्वास रखते हुए मुंह उठाये उधर जा रहे हैं, उन्हें लाख समझाने पर भी वे आत्मा की बात नहीं सुनेंगे। देवयान मार्ग तो उन्हें ही भासता है जो भोगों की निस्सारता इतनी अच्छी तरह से समझ गए हैं, परम लुभावने बड़े-बड़े दिव्य भोगों का (जिनका कि हमें अभी कुछ पता भी नहीं है) देखकर जो उनसे भी ऐसे विरक्त हो चुके हैं कि वे अब इस संसार में सर्वश्रेष्ठ सुखभोग के इन्द्रासनों को छोड़कर ज्ञानरूप तत्त्व की शरण पाने के लिए व्याकुल हो गए हैं=भोगों में अन्धकार ही अन्धकार पाकर अब जो ज्ञानमय लोक में चढ़ना चाहते हैं। अतएव ऐसे मनुष्य अपने पुण्यकर्मों द्वारा चिनी हुई उदीप्त व सुरक्षित की हुई अन्दर की चिताग्नि का आश्रय लेकर उसमें ही वास्तविक यज्ञ करने लगते हैं। अन्दर की अग्नि को भूल बाह्याग्नि में बड़े-बड़े यज्ञ तो पितृयाणवाले भी करते हैं, परन्तु ऐसे सच्चे यज्ञरूपी शोभनकर्म करनेवाले उन 'सुकृत' लोगों को वह देवयान नामक मार्ग इस भोगवाले संसार के अन्धकारमय आकाश में चमकता हुआ दिखाई देने लगता है। यही मार्ग तो 'स्वः' को, आत्म-सुख को, आत्म-ज्योति को प्राप्त कराने वाला है। यदि तुम में अभी भोगलिप्सा तुम्हें अभी वह जगमगाता हुवा ज्योतिषीमान् मार्ग भी दिखाई नहीं दे सकता। जबकि संसार के लिये आकर्षक और प्रार्थनीय बड़े-बड़े स्थानीय भोगों और दिव्य विभूतियों के भोग भी आत्महीनता के कारण तुम्हें बिल्कुल बेकार, निःसत्व जचेंगे और यह आत्मप्रकाशशून्य भोगदायक लोक अन्धकारमय दीखने लगेगा तब उस अन्धेरे के बीच में सुवर्ण रेखा की तरह और फिर विद्युत्-लता की तरह अन्त में चकाचौंध करनेवाली, अनन्तों सूर्यों के प्रकाश को भी मात करनेवाली, ज्योति की तरह वह देवयान का दिव्य प्रकाश तुम्हारे लिए उत्तरोत्तर बढ़ता जायगा। तब भोगवादियों के लाख समझाने पर भी तुम्हें इन भोगों में राग पैदा नहीं होगा। अतः अभी ठहरो, अभी तो इतना याद रखो कि विषयभोग और ज्ञान बिल्कुल उलटी चीजें हैं। भोग कामना की रात्रि के बिना हटे ज्ञान-सूर्य का उदय नहीं हो सकता।

शब्दार्थ-(नाकस्य पृष्ठात्) सुखभोग के लोक से (दिवं) प्रकाशमय 'द्यौ' लोक के प्रति (उत्पतिष्यन्) ऊपर उठना चाहता हुआ और इस प्रयोजन से (ईजानः) वास्तविक यजन करता हुवा (चित अग्नि) पुण्योंकर्मों द्वारा चिनी हुई अग्नि का आंतर अग्नि का (आ अरुक्षत्) आश्रय ग्रहण करता है (तस्मै) उसे ही (सुकृते) शोभनरकर्म करनेवाले मनुष्य के लिये (ज्योतिषीमान्) ज्येतिर्मय (स्वर्गः) आत्मसुख को प्राप्त करने वाला (देवयानः पन्थाः) देवयान मार्ग (नभसः) इस प्रकाशरहित संसार आकाश के बीच में (प्र भाति) प्रकाशित हो जाता है।

ooo

सम्पादकीय.....

देशभक्त की परिभाषा : विचारणीय विषय

देशभक्त का अर्थ है अपने देश की भलाई के लिए निष्ठापूर्वक भक्तिभाव रखने वाला और तदनुसार कार्य करने वाला व्यक्ति। ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया कोई भी कार्य देश के वर्तमान और भविष्यत् के लिए किसी भी प्रकार से घातक नहीं होना चाहिए।

भक्त शब्द 'भज सेवायाम्' धातु से निष्पन्न होता है अर्थात् जिस इष्ट देव, देश या व्यक्ति के प्रति जिस व्यक्ति की आस्था हो उसके प्रति सर्वात्मना भाव से पूजा, सेवा, सत्कार करने वाला व्यक्ति भक्त कहाता है।

जैसे शिवजी, विष्णु, राम, हनुमान्, कृष्ण, बुद्ध, महावीर स्वामी, शंकराचार्य, ईसा, मुहम्मद, नानक, कबीर, चैतन्य महाप्रभु, स्वामी दयानन्द आदि इसी प्रकार के अन्य भी प्रसिद्ध व्यक्तियों में से जिस-जिस पुरुष की जिस-जिस अभीष्ट के प्रति आस्था होगी, वह व्यक्ति उसका भक्त कहलाता है।

इसी परिभाषा के अनुसार सारे सैनिक भी देश के प्रति आस्था और श्रद्धाभाव रखने से देशभक्तों की श्रेणी में आ जाते हैं। देश के लिये घातक आचरण करने वालों को दण्डित करके देश को सुरक्षा प्रदान करना देशभक्ति है। पराधीन भारत में महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, रानी लक्ष्मीबाई, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाखां, चन्द्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस, राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह आदि ने जिन देशद्रोहियों को मारा या उनका विरोध किया, वे देशभक्त कहलाते हैं। इन लोगों ने बुद्धिपूर्वक, बिना भावुकता के जिनका विरोध किया वें वस्तुतः देश के लिये घातक और अभिशाप थे। उनको समाप्त करने का अभिप्राय था देश की सुरक्षा करना।

कुछ समय से संसद भवन में यह चर्चा चलती रहती है कि नत्थूराम गोडसे देशभक्त था या नही। जिनकी आस्था गांधी जी में है, वे गोडसे को देशभक्त नहीं मानते। जिनको यह प्रतीत होता है कि गांधी जी की कुछ मान्यताओं और कार्यों से देश को तत्कालीन तथा भविष्यत् में हानि ही हानि है, वे गोडसे को देशभक्त मानते हैं।

यहां विचारना यह है कि गांधी जी के वध के अतिरिक्त गोडसे ने ऐसा और कौन सा कार्य किया था जिससे देश की सुरक्षा को खतरा पैदा हुआ हो। और उनके इस कार्य से देश उन्हें देशद्रोही कहा जाये? सब ओर से विचार करने पर यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि गोडसे को गांधी जी से व्यक्तिगत रूप से कोई शत्रुता नहीं

थी, परन्तु उन्हें यह प्रतीत हुआ कि गांधी जी हिन्दुओं की अनदेखी करके मुस्लिम तुष्टीकरण नीति के द्वारा भारत देश को हानि पहुंचाने के कार्य करते आ रहे हैं। जैसे देश के अनेक भागों में मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं की हत्या की गई, महिलाओं से बलात्कार किये गये, ऐसी दुर्घटनाओं में गांधी जी ने मुसलमानों को बुरा नहीं कहा। स्वामी श्रद्धानन्द जी के हत्यारे को अपना भाई कहा। सत्यार्थप्रकाश को अत्यन्त निराशाजनक पुस्तक बताया। देश की स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु भगतसिंह आदि क्रान्तिकारियों द्वारा किये गये प्रयत्नों की निन्दा की। ऐसे अनेक व्यवहारों से हिन्दू जनता को ठेस पहुंचाई।

भारत सरकार द्वारा पाकिस्तान को उसी समय धन न देने का निर्णय लिया गया, क्योंकि पाकिस्तान कश्मीर पर गुप्त रूप से आक्रमण करवा रहा था, ऐसे समय में उसको दिया जाने वाला धन तत्काल रोका गया था। परन्तु गांधी जी ने यह 55 करोड़ रुपये की राशि देने के लिये सरकार पर दबाव डाला, न देने पर अनशन की आड़ ली। ऐसी अवस्था में सरदार पटेल आदि के न चाहते हुए भी पचपन करोड़ रुपये गांधी जी ने पाकिस्तान को दिला दिये। उन रुपयों के बल पर पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कराया।

भारत विभाजन के समय मुसलमानों को पाकिस्तान जाने से रोकना, पाकिस्तान से आये हुए असहाय लोगों को भयंकर ठंड और वर्षा के समय मस्जिदों से बाहर निकाल देना, उन दुखी लोगों की बातें न सुनना इत्यादि अनेक अनैतिक कार्यों को देखकर देश की अधिक हानि आगे से न होने पावे, इसलिए गोडसे ने देशहित की भावनायें गांधी जी को रास्ते से हटाने का कार्य किया।

इस प्रकार गोडसे को कोई सामान्य व्यक्ति तो हत्यारा कह सकता है परन्तु प्रबुद्धजन उसे देशद्रोही नहीं कह सकते। यदि किसी व्यक्ति को सन्देह हो तो लालकिले में न्यायाधीश के सामने दिये गये गोडसे के बयान को पढ़ सकता है। न्यायाधीश खोसला ने भी सेवानिवृत्ति के बाद यह लिखा कि-"मुझे बिल्कुल सन्देह नहीं कि उस दिन श्रोतागण की न्यायसभा बनाई जाती और गोडसे की अपील का निर्णय करना उन्हें सोंपा जाता तो बहुत बड़े बहुमत से गोडसे को निर्दोष होने का फैसला उन्होंने कर देना था।"

अस्तु! राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अधिकतर सज्जनों की आन्तरिक भावना गोडसे के प्रति बुरी नहीं है। परन्तु गांधी जी को अभी तक जनता के सम्मुख जिस रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा सामान्य जनता में उनके प्रति जो आस्था उत्पन्न की गई है, जनता की उस भावना को देखते हुए जनता से वोट लेते हैं अतः संघ तथा भारतीय जनता पार्टी भी खुलकर न तो गांधी जी का विरोध कर सकती है और न ही गोडसे का समर्थन कर सकती है। इनको बलात् सच्चाई को छुपाना पड़ रहा है, राजनीति का यह भी

एक पक्ष है। परन्तु सच्चा इतिहास कब तक छुपाया जा सकेगा।

यदि गोडसे का न्यायालय में दिया गया बयान जनता तक पहुंच जाता तो गांधी जी के प्रति देश में आज जो भावना है, उसमें पर्याप्त अन्तर आ गया होता। परन्तु भारत में वोट की राजनीति की प्रमुखता है अतः चाहते हुए भी सत्य को प्रकट करना और खुलकर उसका समर्थन नहीं किया जाता। आज की परिस्थिति में संघ भी सच्चाई को प्रकट करना प्रतिकूल समझता है। इसीलिये विवश होकर सरकार को भी सच्चाई को छुपाना पड़ रहा है और गांधी जी के प्रति भक्ति दिखाने के लिए बीस पैसे की मुद्रा से लेकर दो हजार रुपये के नोट तक गांधी जी का चित्र छाप कर महिमामंडित किया जा रहा है, जैसे कि देश में इनके अतिरिक्त और कोई पूजनीय व्यक्ति हुआ ही न हो। देश की आजादी का श्रेय साबरमती के सन्त को दिया जाता है परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति में क्रान्तिकारी वीरों और शहीदों का भी कम योगदान नहीं है।

भारतीय शासन के निष्पक्ष अधिकारियों तथा समाज के प्रबुद्ध लोगों को इस विषय में गंभीरता से सोचकर निर्णय कर लेना चाहिये कि गोडसे के विषय में न्याययुक्त पक्ष कौनसा है? इस निर्णय के पश्चात् यह विवाद समाप्त कर देना चाहिये कि गोडसे को देशभक्त कहें या नहीं? इस प्रकार के निर्णय करते समय तत्कालीन देश की परिस्थिति तथा वीर सावरकर के बयान और देश के लिये उत्पन्न होने वाले भावी संकटों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। देश के आगे व्यक्ति विशेष की पूजा गौण मानी जानी चाहिये। अन्यथा किसी ने सत्य बात कह दी हो तो उसे माफी मांगने को विवश किया जाना जैसी घटनायें समय-समय पर घटती रहेंगी। यदि भारत विभाजन के समय घटित हुई सभी ऐतिहासिक घटनायें सही रूप में भारत की नई पीढ़ी के सम्मुख प्रस्तुत कर दी जाये तो माफी मांगने की ऐसी घटनाओं में कमी आ सकती है। भारत के इतिहास को पुनः लिखने वाली संस्था इस विषय में आगे साहस दिखाये तो भारत की नई पीढ़ी को भुलाने में नहीं रखा जा सकेगा। भारत विभाजन के समय कीगई भूलों का ही यह परिणाम है कि नागरिकता के विरोध में देशभर में अराजक तत्वों ने जो भयावह ताण्डव नृत्य किया, राष्ट्रीय सम्पत्ति को नष्ट किया और भारत सरकार द्वारा अपनी सफाई देने पर भी उपद्रवी लोग हठपूर्वक व्यवस्था को बिगाड़ रहे हैं ऐसे व्यक्ति देशद्रोही माने जाने चाहियें। राज्य दण्ड के भय से चलता है, मृत्यु का भय सबसे अधिक है। परन्तु उपद्रवी लोगों को मृत्युदण्ड की अपेक्षा लाठी, अश्रुगैस, पासनी की बौछार से डराया जाता है, इसें उपद्रवी लोग सामान्य बात मानकर मनमानी करते रहते हैं। यह लेख प्रबुद्ध व्यक्तियों के विचार विमर्श हेतु ही लिखा गया है सच्चे इतिहास से शिक्षा लेने की भावना लुप्त नहीं होनी चाहिए।

-विरजानन्द दैवकरणि

वीराग्रगण्य नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

-आनन्द देव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता दिल्ली सरकार

नेता जी सुभाष का जन्म 23 जनवरी, 1897 के दिन, कटक के सरकारी वकील जानकी दास बोस के घर हुआ। 1915 ई०में जब सुभाष कालेज में पढ़ रहे थे, एक अंग्रेज प्रोफेसर सी.एफ. ओटन ने एक छात्र को ब्लेक मन्की तथा नेताजी को कुत्ता कहा। तभी तुरन्त नेता जी ने ओटन के मुंह पर जोरदार मताचा मारा। परिणामस्वरूप नेताजी को कालेज से निकाल दिया, किन्तु बाद में परीक्षा में बैठने की अनुमति मिली और नेता जी प्रथम श्रेणी में उत्तींर्ण हुए।

पिता जी के व्यंग्य करने पर नेता जी ने थोड़े ही समय में अच्छे अंकों से आई.सी.एस. परीक्षा उत्तीर्ण की, किन्तु अंग्रेजों की गुलामी न करने के कारण सेवा कार्य नहीं किया।

1942 में आप कलकत्ता नगर निगम के कार्यकारी अधिकारी नियुक्त हुए। उन्हीं दिनों अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया।

29 जनवरी 1938 के दिन आप गांधी जी समर्थित कांग्रेस अध्यक्ष के प्रत्याशी श्री पट्टाभसीता रमैया को भारी मतों से हराकर कांग्रेस अध्यक्ष निर्वाचित हुए, जिसे गान्धी जी ने अपनी हार बताया। तब गांधी जी के असहयोग के कारण आपने कांग्रेस अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया और फारवर्ड ब्लाक नामक अलग पार्टी बनाई।

बाद में अंग्रेज सरकार ने एक भाषण देने के कारण आपको फिर जेल में डाल दिया। तब नेताजी ने आमरण अनशन शुरूकर दिया तो नेता जी की हालत बहुत ही कमजोर हो गई। लाचार होकर सरकार ने आपको जेल से निकाल उनके कलकत्ता वाले घर में नजरबन्द कर दिया। यह मकान एलगिन रोड पर था। सरकार ने उनकी निगरानी के लिये 64 पुलिस वाले लगा रक्खे थे। मकान की दूसरी मंजिल पर पीछे की तरफ आपका कमरा था। अपने घर से गायब होने से कई दिन पहले आपने लोगों से मिलना जुलना बन्द कर दिया था। दाढी बढा ली थी, कमरे के सामने पर्दा रहता। उनके पास एक घंटी थी, उसे बजाते तब कोई व्यक्ति काम पूछने पर ऊपर आता तब आप पर्दे के पीछे से ही पर्चे लिखकर बाहर रख देते। आने वाला व्यक्ति बाहर सामान आदि रखकर चला जाता, आप उसे पर्दे के पीछे से ही उठा लेते। जब कई दिनों तक घंटी नहीं बजी तब घरवालों ने अन्दर जाकर देखा तो अन्दर कोई नहीं था, नेताजी गायब हो चुके थे। उनके काबुल पहुंचने पर ही सरकार को उनके निकल जाने का पता चला।

काबुल से नेता जी इटली दूतावास की सहायता से रूस के रास्ते, जर्मनी पहुंचे।

वहां हिटलर ने उनका बड़ा स्वागत किया। उन्हें एक राष्ट्राध्यक्ष के समान, कार, कोठी, टेलीफोन, रेडियो स्टेशन, अंगरक्षक आदि सभी सुविधाएं दी। तब नेता जी ने बर्लिन से भारत वासियों के लिये एक संदेश प्रसारित किया। तब अंग्रेजों को पता चला कि नेता जी जर्मनी पहुंच गये हैं।

वहां नेता जी ने भारतवासी युद्ध बंदियों में भाषण दिया। उनसे प्रभावित होकर पांच हजार सैनिक उनकी सेना में भर्ती हो गये। उस सेना ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध भी किया। नेता जी चाहते थे कि उन सैनिकों को भेजकर अफगानिस्तान की तरफ से भारत पर आक्रमण किया जाय किन्तु तभी जर्मनी तथा रूस में विद्रोह उत्पन्न हो गया, अत: योजना सफल न हो सकी।

उन्ही दिनों जर्मनी सरकार का नेता जी के परास टोकियो आने का बुलावा आ गया।

पनडुब्बी द्वारा जापान प्रस्थान–तब नेता जी अपने साथ पनडुब्बी चालक तथा दो अन्य व्यक्ति जिनमें कैप्टेन कंवल सिंह (मांडोठीजोकि प्रोफेसर शेरसिंह के बहनोई थे) को साथ लेकर जापान पहुंच गये। स्मरण रहे उस समय विश्व युद्ध चल रहा था और बड़ा खतरा था।

द्वितीय विश्वयुद्ध तथा आजाद हिन्द सेना–दिसम्बर 1941 में जापान ने सुदूरपर्व के देश–हांगकांग, फिलिपीन्स, मलाया, अन्डेमान, बर्मा, सुमात्रा आदि देशों को युद्ध होते ही जीत लिया था। इन दोनों देशो में भारतीय सैनिक जो अंग्रेजों की तरफ से लड़ रहे थे को 60 हजार को बन्दी बना लिया था। उन्हीं दिनों प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रास बिहारी बोस ने जापानियों से मिलकर जनरल मोहन सिंह के सहयोग से मिल उन युद्धबंदियों का आजाद हिन्द सेना नामक संगठन बनाया। किन्तु रास बिहारी बोस वृद्ध थे तथा अस्वस्थ भी थे, अत: कार्य आगे नहीं बढ रहा था। तब श्री बोस ने जापानी नेताओं से अनुरोध किया कि आप नेता जी को यहां सेना सम्भाल लेने के लिये बुला दें। तब नेता जी जापानी अधिकारियों के अनुरोध पर 2–7–1943 ई० को जापान पहुंचे। जापानी अधिकारियों ने नेता जी का भव्य स्वागत किया तथा जर्मनी की तरह उन्हें सब सुविधाएं दी। तब नेता जी ने भारत के लोगों के लिये एक सन्देश प्रसारित किया। उन्हीं दिनों सिंगापुर की एक विशाल सभा में नेता जी का स्वागत किया गया, तब नेता जी ने सुदूर पूर्व में विमान लाखों भारतवंशियों से सेना में भर्ती होने तथा धन दान देने के लिये अपील की।

नेता जी को सिंगापुर में कतोंग नामक स्थान में एक शानदार बंगले में ठहराया गया। यह बंगला समुद्र के किनारे स्थित था तथा चारों तरफ 12 फुट ऊंची दिवारें बना दी गई थी। इस बंगले में बाग बगीचे भी थे। यहां पर हर समय सैनिकों का पहरा भी रहता था।

प्रधानमंत्री टोजो ने नेताजी को एक विमान भी भेंट किया, नेता जी इसी विमान से

आते जाते थे।

सुदूरपूर्व में इस तरह का कार्य इससे पहले किसी नेता ने नहीं किया था, अत: जनता उन्हें नेता जी के नाम से पुकारने लगी। जापानी भी नेता जी को चन्द्रबोस के नाम से पुकारते थे।

तब सिंगापुर में नेताजी से मिलने जापानी तथा जर्मन सैनिक अधिकारी और अन्य देशों के प्रतिनिधि भी प्रतिदिन आते थे। श्री रास बिहारी बोस ने नेता जी का परिचय आजाद हिन्द सेना के कर्नल भोंसले तथा जनरल मोहनसिंह आदि सैनिक अधिकारियों से कराया।

4-7-1943 में होने वाले बहुत से देशों के सम्मेलन में-हांगकांग, इन्डोचाइना, फिलीपीन्स,मंचूरिया, जावा, सुमात्रा, बर्मा आदि देशों के प्रतिनिधि पहले ही दिन इकट्ठे हो गए थे। नेताजी ने तिरंगे में चरखे के स्थान पर छलांग लगाता शेर को स्वीकृति दी थी।

4-7-1943 को प्रात: सभास्थल में नेता जी रास बिहारी के साथ पहुंचे इनके पीछे-पीछे जापानी अधिकारियों की कारें भी पहुंच गई। नेता जी का सैनिक सम्मान किया गया।

झांसी रानी रेजिमेंट-12-7-1943 को नेता जी का भाषण आजाद हिन्द सेना की महिला शाखा के सामने हुआ। इस भाषण के तीन महीने बाद 22-10-1943 को रानी झांसी रेजिमेंट का उद्घाटन हुआ। इस रेजिमेंट की सेनापति डा० लक्ष्मी थी।

भारतीय स्वतन्त्रता संघ- नेताजी ने सुदूरपूर्व के सब भारतीयों को बुलाकर ''भारतीय स्वतंत्रता संघ'' की स्थापना भी की, इस संघ में उन देशों का कोई भी भारतीय सम्मिलित हो सकता था। इसी प्रकार आजाद हिन्द सेना में कोई भी युद्धबंदी या कोइ भी भारातवंशी सम्मिलित हो सकता था। नेता जी ने 9-7-1943 के भाषण में तीन लाख सेना भर्ती करने का लक्ष्य घोषित किया।

हितकारी किकान- जापान में विदेशी लोगों के प्रबन्धन आदि से सम्बन्धित एक वि भाग ''हिन्दी किकान'' नाम से था, विदेशियों से सम्बन्धित सब प्रकार के अधिकार इस विभाग के पास थे। नेताजी जी के तीन लाख सेना का लक्ष्य सुनकर इस विभाग के अधिकारियों के कान खड़े हो गये और इस विभाग ने उसी समय से आजाद हिन्द सेना के काम में रोड़े अटकाने शुरू कर दिये। जब नेता जी जापान के उच्च अधिकारियों से किसी काम के लिये कहते तो वे तुरन्त स्वीकृति दे देते (दिखावे के लिये) किन्तु उस बात पर आचरण बिल्कुल नहीं करते थे। जापानी नहीं चाहते थेकि आजाद हिन्द सेना इतनी विशाल तथा सशक्त हो, अत: उस विषय में वे परोक्ष में कानाफूसी करते रहते थे। जब नेताजी के आदमी उनको इस विषय में बताते तो कभी तो नेताजी हंसकर टाल देते तथा कभी इस विषय पर उन लोगों से चर्चा भी करते थे।

नेताजी के लाख प्रयत्न करने पर भी जापानियों ने आजाद हिन्द सेना की संख्या पचास हजार तक ही करने की अनुमति दी।

जापानी लोग आजाद हिन्द सेना को शस्त्र तथा राशन देने में आनाकानी करते थे, अत: जो हथियार तथा राशन मिलता उससे ही काम चलाना पड़ता। जापानी चाहते थे कि युद्धबन्दी लोग आजाद हिन्द सेना में कम से कम भर्ती होने चाहिएं, जिससे बचे हुए लोगों से मजदूरी कराई जा सके। आजाद हिन्द सेना में अन्त तक बीस हजार युद्धबन्दी तथा बीस हजार बाहर के लोग भर्ती हुए थे। जब इन लोगों को ट्रेनिंग दी जाने लगी तो हथियारों में कटौती कर दी गई। इसके कारण ट्रेनिंग में बाधा आने लगी।

आजाद हिन्द सरकार ने ''आजाद हिन्द'' नामक एक अखबार भी निकालना शुरू किया था। जब नेता जी ने ''रानी झांसी ब्रिगेड'' की घोषणा की तो उत्साह के साथ बहुत सी महिलाएं वहां पहुंच गई। भर्ती करके इनको ट्रेनिंग भी दी गई। युद्धक्षेत्र में जाकर इस ब्रिगेड ने बड़ी वीरता प्रदर्शित की।

आजाद हिन्द बैंक–15 अगस्त 1943 के दिन सिंगापुर के फैरर पार्क में नेताजी का अभिनन्दन हुआ और उन्हें फूलमालाएं भी पहनाई गई। नेताजी के भाषण के बाद इन फूलमालाओं की निलामी हुई तथा कई मालाओं की बोली तो दो लाख रुपये तक भी पहुंच गई। 25–20–1943 को नेता जी ने मलाया देश के लोगों के सामने भाषण दिया, इस सभा में दो करोड़ रुपया इकट्ठा हो गया।

आजाद हिन्द सेना में परस्पर अभिवादन जय हिन्द से किया जाता था।

सुदूर पूर्व के अन्य देशों में नेता जी जहां भी गये, उनका शानदार स्वागत किया गया। एक स्थान पर एक तमिल ने नेता जी को सोने की तोप भेंट की तथा एक अन्य ने दो लाख रुपये भेंट किये। महिलाओं ने अपने आभूषण उतार कर उनके लिये भेंट किये। इस प्रकार सें एकत्रित धन से नेता जी ने आजाद हिन्द बैंक की स्थापना की। इन पैसों से ही नेता जी ने लाखों रुपयों का युद्ध का सामान जापानियों को भेंट किया।

21–10–1943 के दिन एक सभा में नेताजी ने आजाद हिन्द सरकार की भी घोषणा की। इस प्रकार के अधिकारी निम्न प्रकार थे–

1. नेताजी सुभाष : राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, युद्धमन्त्री, परराष्ट्रमन्त्री, सेनापति।
2. डा० लक्ष्मी : महिला मण्डल मन्त्री
3. श्री एस.एस. अय्यर –प्रचार मंत्री
4. ए.एस. चैटर्जी–अर्थ मन्त्री
5. आनन्द मोहन–मंत्री मण्डल सचिव
6. श्री रासबिहारी बोस–वरिष्ठ परामर्श दाता
7. डा० ए.एन. खान–विधि परामर्श दाता।

भारतीय युद्धबंदियों की मनोवृत्ति

1. महाराष्ट्र के दो युद्धबंदी अधिकारी

भी वहां थे, ये अन्दरूनी रूप से नेता जी के विरोधी थे, नेताजी की सभाओं में जाकर शोर शराबा करके ये सभाओं में बाधा डालने का प्रयत्न करते थे और लोगों को सेना में भर्ती होने से रोकते थे, धमकाते थे और पीटकर भगा भी देते थे।

2. एक राजपूत अफसर ने नेता जी के ही एक व्यक्ति श्री पी.एन. ओक के सामने कहा-मुझे लगता है कि ये नेता जी असली सुभाष नहीं हैं, नकली नेताजी हैं।

3. छावनी का एक युद्धबंदी अधिकारी नेता जी से प्रभावित जवानों को, कभी सेना में भर्ती न हो जाय, इसलिये उस दिन उन लोगों को उस स्थान से बाहर भेज देते थे जिस दिन वहां नेता जी का भाषण होता था।

इस प्रकार और भी कितनी ही अन्य घटनायें हुई, जब आजाद हिन्द सेना के अधिकारियों तथा जापानियों की बाधा डालने के कारण ही आजाद हिन्द सेना की संख्या चालीस हजार तक ही पहुंच पाई।

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि जापानी अधिकारी आजाद हिन्द सेना के मार्ग में बाधा डालते रहते थे, फिर भी थोड़ी मात्रा में नये पुराने शस्त्र थे, उन्हें लेकर कभी पैदल दुर्गम मार्गों को पार करते और लारी या मोटर बोटों से समुद्र पार कर आजाद हिन्द सेना वर्मा देश को पार करके भारतीय सीमा पर समुद्र पार कर जनवरी 1944 में पहुंच गई। इस समय मोर्चे पर जापानी तथा आजाद हिन्द सेना साथ-साथ लड़ रही थी। 18-8-1944 को इस सेना ने भारत के पहले गांव में झंडा फहराया। हमला होते ही मणिपुर का राजा तथा वहां के अंग्रेज अधिकारी दिल्ली भाग गये। आजाद हिन्द सेना ने इम्फाल पर कब्जा कर लिया और इम्फाल से कोहिमा जाने वाले मार्ग को रोक लिया, जिससे अंग्रेज सेना कोहिमा की तरफ न भाग सके। आजाद हिन्द सेना ने अंग्रेज सेना से हथियार डलवाने का प्रयास किया। अंग्रेज सेना आत्मसमर्पण करना भी चाहती थी किन्तु किन्हीं कारणों से रुकी हुई थी। यदि उस समय जापानी हवाई हमले कर देते तो इम्फाल का पतन हो जाता तथा आजाद हिन्द सेना आगे बढ जाती। किन्तु जापानियों की कुटिलता के कारण ऐसा नहीं हुआ। तभी पैसेफिक सागर में अमेरिका की सेना की गतिविधि तेज हो गई तथा जापानियों ने अपने हथियार तथा सेना वापिस भेजनी शुरू कर दी। ऐसा करने से आजाद हिन्द सेना को तो पीछे हटना पड़ा, साथ ही जापान को भी इसका फल शीघ्र मिल गया। जापान हार गया। यदि जापान उस समय सारा जोर इम्फाल पर लगा देता तो आजाद हिन्द सेना भारत में आग बढ जाती तथा साथ ही भारत की जनता भी विद्रोह कर देती और अंग्रेजों को यहां से भागना पड़ता।

शस्त्रों की कमी के रहते भी आजाद हिन्द सेना थोड़े हथियारों से ही लड़ती रही। श्री पी.एन.ओक जोकि आजाद हिन्द सेना में

सूचना प्रसारण अधिकारी थे ने अपनी पुस्तक ''भारत का दूसरा स्वतंत्रता संग्राम'' के पृष्ठ 297 पर लिखा है कि उस समय आजाद हिन्द सैनिक खिलौना बन्दूखों से पटाखे छोड़कर भी दुश्मनों पर हावी थे। लेखक के गांव के आजाद हिन्द सैनिक श्री रामसरूप भी बताते थे कि हम पीपे बजाकर दुश्मनों को डराते थे। परन्तु परिस्थिति बिगड़ती देख अन्त में आजाद हिन्द सेना को वापिस हटना पड़ा। जब सेना वापिस लौट रही थी, उस समय नेता जी अपनी लारी को सबसे पीछे रखते थे, जब सब निकल जाते तभी नेता जी आगे बढते थे। एक दिन नेता जी अंग्रेज सेना से घिर गये, किन्तु अपनी चतुराई से किसान का भेष बना बैलगाड़ी में बैठ कर बच निकले। स्मरण रहे, उस समय पग-पग पर अंग्रेजों के वायुयान बम बरसा रहे थे और सैनिक मारे जा रहे थे। नेता जी वर्षा के समय भी छिपते नहीं थे। नेता जी का कथन था कि अंग्रेजों के पास मुझे मार सकने वाली गोली बनी ही नहीं है।

उन्हीं दिनों अमरीका ने जापान के नागासाकी तथा हिरोशिमा नगरों पर परमाणु बम गिरा दिये। दोनों नगर भस्म हो गये, लाखों आदमी मारे गये।

17-8-1945 को जापान ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली। तब सभी जापानी तथा आजाद हिन्द सेना के अधिकारियों ने विचार किया कि किसी प्रकार नेताजी को जापान से सुरक्षित निकालना चाहिये। यह बात आजाद हिन्द सेना के सूचना प्रसारण अधिकारी श्री पी.एन. ओक ने अपनी पुस्तक ''भारत का दूसरा स्वतंत्रता संग्राम'' के 358 पृष्ठ पर लिखी है।

तब उपरोक्त योजना द्वारा नेताजी को मंचूरिया विमान द्वारा भेज दिया और चार - पांच दिन बाद घोषणा कर दी कि विमान दुर्घटना ग्रस्त हो गया है तथा नेताजी की मृत्यु हो गई है।

मैं इससे पहले भी सुधारक में ही एक लेख लिख चुका हूं कि नेताजी के भक्त प्रसिद्ध नेता श्री सत्यनारायणसिंह, निजी खोज यात्रा पर जब उपरोक्त देशों में गये, तब अनेक लोगों ने उनके सामने बताया कि हमने नेताजी को इसके बाद मंचूरिया में जीवित देखा है। बाद में मंचूरिया पर रूस का अधिकार हो गया और रूस सरकार ने नेता जी को बन्दी बना लिया तथा साईबेरिया की केकट्स जेल में डाल दिया जहां उन्हें एक भारतीय बन्दी ने स्वयं देखा था। क्योंकि साईबेरिया में अधिक ठंड पड़ती है अत: वहां राजनैतिक बंदियों को समाप्त करने के लिये ही भेजा जाता है।

अनुमान किया जाता है कि 1967 के आसपास उसी जेल में नेता जी का देहान्त हुआ होगा। क्योंकि नेहरू गांधी परिवार ने1968 ई० तक नेताजी की जासूसी कराई है, ऐसा सामचार अखबारों में छपा था। ऐसे वीर सेनानी को शतश: नमन।

सम्पर्क सूत्र : 111/19, आर्यनगर, झज्जर्
मो० 9996227377

वाणी का तप

-स्वामी श्रद्धानन्द

शारीरिक तप जहां तक अपने आप तक सीमित रहता है वहां वाणी का तप अपना क्षेत्र विस्तृत कर लेता है। वाणी का सम्बन्ध दूसरे प्राणियों से अधिक रहता है। पहली विशेषता वाणी के तप की यह है कि ऐसा तपस्वी जो शब्द मुंह से निकाले उसमें कठोरता का लेशमात्र भी न हो। वाणी साधन है एक मनुष्य के विचारों को दूसरे के मन तक पहुंचाने का। किन्तु कठोर वचन से बोलन का असल अभिप्राय नष्ट हो जाता है। जिस मनुष्य तक तुम किसी सच्चाई को पहुंचाना चाहते हो, अगर वह तुम्हारी बात सुनने के लिये तैयार ही नहीं होता तो तुम्हारा बात करने का क्या लाभ? किन्तु केवल कठोर वचन को छोड़ने से ही काम नहीं निकलता। कठोर बोलने से तुम्हारे छुटकारे का केवल यही परिणाम हो सकता है कि तुम्हारे भाषण से दूसरा घृणा न करेगा। परन्तु मतलब उस समय तक सिद्ध नहीं होता जब तक वह मनुष्य जिसे तुम अपनी बात सुनाना चाहते हो तुम्हारी तरफ आकृष्ट न हो जावे। इस आकर्षण का कारण क्या हो सकता है? किस आचरण से दूसरे मनुष्य की रुचि स्वयं तुम्हारी ओर खिंच सकती है। विशेष पुरुषों के भाषण में विशेष प्रकार का रस होता है, इसके कारण उनका कठोर भाषण भी सुनने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इसका रहस्य क्या है? कृष्ण भगवान् उत्तर देते हैं, अपनी वाणी को प्रिय बनाओ। प्रेम भाव उसके अन्दर कूट-कूट कर भर दो। फिर मनुष्यों के दिल तुम्हारे कथन की तरफ स्वयं खिंचे चले आवेंगे। जिस कथन के अन्दर यह शक्ति है कि तुम से समाज को दूर फेंक दें उसी कथन के अन्दर यह शक्ति भी है कि वह हृदयों को खींचकर तुम्हें सौंप दे। माना कि कथन में सख्ती न होनी चाहिए और यह भी मान लिया कि तुमने अपने कथन को दूसरों के लिये प्यारा बना दिया परन्तु जब तक वह कथन हितकारी नहीं, जब तक मनुष्य की भलाई के हेतु से नहीं बोला जाता तब तक उसका वास्तविक फल तुम को नहीं मिल सकता। संसार में बड़े-बड़े मधुर भाषण का सारा बल मनुष्यों की उन्नति में लगता रहा है। जिस तरह विद्या एक प्रबल शक्ति है उसी तरह वाणी भी एक प्रबल शक्ति है, जिसके द्वारा विद्या का प्रकाश होता है। परन्तु जिस तरह विद्या एक दो धारा वाली तलवार की तरह दोनों तरफ चलती है, वही अवस्था वाणी की है। स्वार्थ सिद्धि के लिये कही हुई प्रिय वाणी संसार में हलचल मचा देती है। परन्तु वही प्रिय वाणी जब संसार के उपकार के लिये बोली जाती है तो अनगिनत मनुष्यों के लिए शान्ति का कारण होती है। सत्य यह है कि स्वार्थ के लिए बोली हुई वाणी चाहे कैसी ही प्रिय क्यो न हो, उसका बल केवल दिखलावे का ही होता है, उसका प्रभाव देर तक नहीं रहता। किन्तु जिस वाणी का प्रयोग प्राणधारियों के लिए होता है उसके अन्दर स्वाभाविक बड़ा बल है। क्या वाणी की विशेषताएं यहां तक ही समाप्त हो जाती है? बिल्कुल नहीं। चाहे वाणी कैसी भी कठोरता से

रहित हो, चाहे कैसी प्यारी और कितना ही परोपकार करने वाली हो, अगर उसकी नींव सत्य पर नहीं है तो वह मनुष्य का कर्तव्य कर्म नहीं है।

वह सत्य जिस पर सारा ब्रह्माण्ड आश्रित है, वही वाणी का भी आधार है। प्रश्न स्वत: उत्पन्न होता है-

''क्या दु:खित मनुष्य के सन्मुख सत्य बोलकर उसे और दु:खित करना हित कहला सकता है?'' यह प्रश्न अविद्या के कारण हम मनुष्य के हृदयों के अन्दर उठता है। यह समझना हमें कठिन नहीं है। जो सत्य नहीं वह सर्व हित के लिए कैसे हो सकता है? हितकारी क्या है? हम यहां तक तो पता नहीं लगा सकते कि हमारे लिए क्या हितकारी है फिर यह पता लगाना कैसा कठिन है कि दूसरों के लिए हितकारी क्या है? इसलिये हरेक वाणी को उचित अनुमान लगाने के लिए उसे केवल सत्य की कसौटी पर रखना ही पर्याप्त है। अगर सत्य बोलने के लिये वाणी में सख्ती का आना आवश्यक है तो आने दो, किन्तु सच्चाई को विशेष मनुष्य के हित के लिए कभी भी न्यौछावर न करो, यह ऋषियों का उपदेश है। उपदेश बड़ा लाभकारी है किन्तु इस पर चलें कैसे? इसका उत्तर ऋषि मुनि सदैव से एक ही देते आये हैं। जिस तरह दूसरे कर्तव्य कर्मों में दृढ़ होने के लिए अभ्यास की आवश्यकता है उसी तरह वाणी भी तभी ठीक हो सकती है जबकि उसकी पवित्रता के लिए विशेष अभ्यास किया जावे। और वह स्वाध्याय से बढ़कर और अभ्यास हो नहीं सकता । नित्य वेदों का अर्थ सहित पाठ करना ही स्वाध्याय कहलाता है। आज वेदार्थ को समझना तो दूर रहा आर्यों में से दस प्रतिशत तक भी वेदों का पाठ तक नहीं कर सकते। ऐसी अवस्था में उनको चाहिए कि ऋषि प्रणीत धर्मग्रन्थों का पाठ नियम से करें। प्रात: काल ब्राह्ममुहूर्त में उठकर शारीरिक व्यायाम और स्नान के पश्चात् पहला कार्य ब्रह्मयज्ञ है। परमात्मा के सत्संग से मन को स्थिर करके शारीरिक स्वास्थ्य के लिये देव यज्ञ अर्थात् अग्निहोत्र के पश्चात् स्वाध्याय का समय है। यदि और धर्म ग्रन्थ नहीं समझ सकते तो न्यून से न्यून जिस भाषा को समझ सकते हैं उसमें लिखे हुए सत्पुरुषों के उपदेश का पाठ अवश्य किया करें। आर्यसमाज के लिए ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका बड़ा रास्ता दिखाने का काम दे सकते हैं। जो मनुष्य इससे आगे बढ़ना चाहते हैं वे वेदभाष्य का विचार आरम्भ कर सकते हैं। स्वाध्याय मनुष्य को गिरते गिरते बचा सकता है। इसलिए वाणी को कठोरता रहित करने, प्रिय हितकारी बनाने और सत्य के सीधे सरल मार्ग से न डगमगाने देने के लिये आवश्यक है कि स्वाध्याय का कभी त्याग न किया जाये। हर देश, प्रत्येक सम्प्रदाय और प्रत्येक समय में महापुरुषों ने स्वाध्याय पर बड़ा भारी बल दिया हैं। वाणी के तप के बिना शारीरिक तप की सिद्धि नहीं हो सकती, इसलिए वाणी को पवित्र करो। उसे सत्य से मांजकर प्रिय और हितकारी बनाओ जिससे संसार के अन्दर सुख और शान्ति का राज्य आव और हम सब प्रेम पूर्वक एक दूसरे के आत्मिक बल को बढ़ाते हुए मुक्ति धाम में परमानन्द लाभ करने के अधिकारी बन सकें।

महर्षि दयानन्द व कवि मैथिली शरण गुप्त

दिसम्बर २०१९ से आगे.....

-बस कागजी घुड़दौड़ में है, आज इति कर्तव्यता,
भीतर मलिनता हो भले ही, किन्तु बाहर भव्यता।
धनवान् ही धार्मिक बनें, यद्यपि अधर्मसक्त हैं,
है लाख में दो चार सुहृदय, शेष बगुला भक्त हैं।
-श्रुति क्यों न हो, प्रतिकूल हैं, जो स्थल वही प्रक्षिप्त है,
विक्षिप्त से हम दम्भ में, आपादमस्तक लिप्त हैं।
आक्षेप करना दूसरों पर, धर्मनिष्ठा है यहां,
पाखण्डियों की ही अधिकतर, अब प्रतिष्ठा है यहाँ
-जिसके लिए संसार अपना सार्वकालिक ऋणी रहा,
उस धर्म की भी दुर्दशा, हमने उठी रक्खी न हा।
जो धर्म सुख का हेतु है, भव सिन्धु का जो सेतु है,
देखो उसे हमने बनाया, अब कलह का केतु है।
-प्रभु एक पर असंख्य उसके, नाम और चरित्र हैं,
तुम शैव हम वैष्णव, इसी से हाय अभाग्य अमित्र हैं।
तुम ईश को निर्गुण समझते, हम सगुण भी जानते,
हा! अब इसी से हम, परस्पर शत्रुता मानते।
-हिन्दू सनातन धर्म के, ऐसे पवित्र विधान हैं,

९. गोवध

संसार में सबके लिए, जो मान्य एक समान हैं।
धृति, शांति, शौच, क्षमा, दम, अहिंसा, सत्यता,
पर हाय! इनमें से किसी का, आज हममें है पता!
-विख्यात हिन्दू धर्म ही सच्चा सनातन धर्म है,
वह धर्म ही धारण क्रिया का, नित्य कर्ता कर्म है।
परमार्थ की संसार की भी-सिद्धि का वह धाम है,
पर वाद और विवाद में ही, आज उसका नाम है।

ऋषि दयानन्द की गोकरुणानिधि और कवि की वाणी

-है भूमि वन्ध्या हो रही, वृषजाति दिन दिन घट रही,
घी दध दुर्लभ हो रहा बल वीर्य की जड़ कट रही।
गोवंश के उपकार की सब ओर, आज पुकार है,
तो भी यहां उसका निरन्तर, हो रहा संहार है।
-दातों तले तृण दाब कर, हम दीन गायें कह रही,
हम पशु तथा तुम हो मनुज, पर योग्य क्या तुमको यही।
हमने तुम्हें मां की तरह, दूध पीने को दिया,
देकर कसाई को हमें, तुमने हमारा वध किया।-
हाय! दूध पीकरभी हमारा, पुष्ट होते हो नहीं,
दधिघृत तथा तक्रादि से भी, तुष्ट होते हो नहीं।
तुम खून पीना चाहते हो, तो यथेष्ट वही सही,
नरयोनि हा, तुम धन्य हो, तुम जो करो थोड़ा वही।
-जारी रहा क्रम यदि यहां, यों ही हमारे नाश का,
तो अस्त समझो सूर्य, भारत-भाग्य के आकाश का
जो तनिक हरियाली रही, वह भी न रहने पायेगी,
यह स्वर्ण भारत भूमि बस, मरघट मही बन जायेगी।

सत्यार्थप्रकाश ३-४ समुल्लास के भाव

१० नारी

-होती रही गार्गी अनेकों और मैत्रेयी जहां
अब हैं अवद्या-मूर्ति सी, कुल नारियां होती यहां।
क्या दोष उनका किन्तु जो, उनमें गुणों की है कमी,
-रखती यही गुण वे कि, गन्दे गीत गाना जानती,
कुल,शील,लज्जा उस समय, कुछ भी वे नहीं मानती,
हंसते हुए हम भी अहो! वे गीत सुनते सब कहीं,
रोदन करो हे भाइयो! यह बात हंसने की नहीं।
-क्या नहीं कर सकती भला, यदि शिक्षित हों नारियां?
रणरङ्ग, राज्य, सुधर्मरक्षा कर चुकी सुकुमारियां।
लक्ष्मी, अहिल्या, बायजाबई, भवानी, पद्मिनी,
ऐसी अनेकों देवियां हैं, आज जा सकती गिनी।
-सोचो नरों से नारियां किस बात में कम हुई?
मध्यस्थ वे शास्त्रार्थ में हैं, भारती के सम हुई।

है धन्य भेरी तुल्य गाथा-कवियित्रां वे सर्वथा,
कवि हो चुकी है बिज्जका, विजया मधुरवाणी यथा।

११. शिक्षा सत्यार्थप्रकाश ३ समुल्लास से-

-हा !आज शिक्ष मार्ग भी, संकीर्ण होकर क्लिष्ट है,
कुलपति सहित उन गुरुकुलों का ध्यान ही अवशिष्ट है।
बिकने लगी विद्या यहां, अब शक्ति हो तो क्रय करो,
यदि शुल्क आदि न दे सको, तो मूर्ख रहकर ही मरो।
-है सोचने से भी कहीं, द्विजमूर्ख मिल सकते नहीं
अनिवार्य शिक्षा के नियम हैं, जोकि हिल सकते नहीं
यदि गांव में द्विज एक भी द्या न विधिपूर्वक पढ़े
तो दण्ड दे उसको नृपति, फिर क्यों न यों शिक्षा बढे।

१२ जड़ पूजा का खण्डन

सत्यार्थप्रकाश११वें समुल्लास से

-जड़ से हमें क्या जबकि हम, थे नित्य चेतन से मिले,
है दीप उनके निकट क्या,जो पद्म दिनकर से खिले।
हम बाह्य उन्नति पर कभी मरते न संसार में,
बस मग्न थे अन्तर्जगत के, अमृत पारावार में।
-था कौन ईश्वर के सिवाय जिसको हमारा सिर झुके
हा! कौन ऐसा स्थान था, जिसमें हमारी गति रुके।
सारी धरा तो थी धरा ही, सिन्धु भी बंधवा दिया,
आकाश में भी आत्मबल से, सहज ही विचरण किया।

-प्रस्तुतकर्ता रतनसिंह
यादव (मेजर सेवानिवृत्त)फोन : 0950341006
जखाला गुडियानी, रेवाड़ी

शोक सन्देश

गुरुकुल झज्जर के प्रधान चौ० पूर्णसिंह जी देशवाल (भदानी) के छोटे भाई श्री इन्द्रराज जी का हृदयगति रुक जाने से ५ जनवरी २०२० को अचानक निधन हो गया। वे ७७ वर्ष के थे। उनकी अन्त्येष्टि उनके ग्राम भदानी (झज्जर) में आचार्य विजयपाल जी योगार्थी ने पूर्ण वैदिक विधि से कराई। उनकी शांतिसभा १२ जनवरी २०२० को उनके निवास स्थान रामलीला मैदान के निकट झज्जर में हुई। दिवंगत आत्मा की शांति तथा शोकसंतप्त परिवार केधैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना है।

-सम्पादक सुधारक

शोक सन्देश

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता आर्य हिन्दी संस्कृत महाविद्यालय चरखी दादरी के आचार्य ऋषिपाल जी का ३१-१२-२०१९ को लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। उनकी अन्त्येष्टि १ जनवरी २०२० को उनके ग्राम बूरा खेड़ी (चरखी दादरी) में आचार्य विजयपाल योगार्थी गुरुकुल झज्जर के निर्देशन में की गई। अन्त्येष्टि के समय दादरी के सैकड़ों सज्जन उपस्थित थे।

८ जनवरी २०२० को इनके ग्राम में शांतियज्ञ किया गया। यज्ञ का कार्यक्रम तथा शांतिसभा आचार्य विजयपाल के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। उसी समय दिवंगत आत्मा को श्रद्धाजलि अर्पित करके पारिवरिक जनों के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट की गई।

आर्य विद्वानों, नेताओं और प्रचारकों से प्रार्थना है कि आर्यसमाज मन्दिरों में हो रहे भगौड़े प्रेमी जोड़ों के विवाह पर तुरन्त प्रभावी अंकुश लगायें

अनेक वर्षों से समाचार पत्रो में भगोड़े 'प्रेमी जोड़ों' के विवाह आर्यसमाज मन्दिरों में' छप रहे हैं। कुछ प्रमाण निम्नलिखित हैं-

फरवरी २०११ से अक्टूबर २०१५ तक हमारी दृष्टि में लगभग २५ जोड़ों के प्रेम विवाह दिल्ली, बून्दीशहर (राजस्थान), गाजियाबाद (उ०प्र०), चण्डीगढ़, पंचकूला, हिसार, सिरसा, फतेहाबाद, रेवाड़ी, नारनौल (हरयाणा) के आर्यसमाज मन्दिरों में हुए हैं, जिनकी सूचनायें दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर आदि समाचार पत्रो में छपी हैं। अन्य समाचार पत्रों में (जो हमारी दृष्टि में नहीं) इस प्रकार की घटनायें अवश्य छपी होंगी।

दुष्परिणाम:-

इस प्रकार की घटनाओं से आर्यसमाज का अपयश फैल रहा है और प्रभाव कम हो रहा है। जनसाधारण आर्यसमाज के प्रति अपशब्द बोलते हैं और व्यंग्य कसते हैं। प्रचारकों के लिए एक भयंकर बाधा खड़ी हो गई है-प्रचार के समय लोग प्रश्न खड़ा करते हैं, जिसका जवाब नही बनता। लड़की वाले तथा उनसे सम्बन्धित व्यक्ति आर्यसमाज के कट्टर विरोधी बन रहे हैं।

चेतावनी :-

निकट भविष्य में यह आशंका है कि चरित्र रक्षा एवं विवाह मर्यादा-रक्षार्थ जो सर्वखाप पंचायत आज तक आर्यसमाज का साथ दे रही हैं वे आर्यसमाज के विरोध में आ सकती हैं।

समर्थन में दिए जा रहे तर्कों के सम्बन्ध में:-

कुछ विद्वान् इसको स्वयंवर विवाह कोटि में मानते हैं, परन्तु ऐसे अधिकांश विवाह भावुकतावश कामुक युवक-युवतियों की उच्छृंखलता क दुष्परिणाम हैं। प्राचीन काल में हुए स्वयंवर विवाहों से भी इसकी तुलना करना गलत है क्योंकि उन विवाहों में स्वयंवर की शर्तों का निर्धारण या तो माता पिता आदि स्वयं करते थे या उनकी सहमति होती थी और स्वयंवर की शर्त पूरी होने पर माता पिता के घर ही विवाह संस्कार होते थे।

'आर्यसमाज की पीड़ा' पुस्तक के लेखक डा० महेश विद्यालंकार ने इस पुस्तक में 'आर्यसमाज मन्दिर और प्रेम विवाह' शीर्षक से लिखे लेख में अपनी आंतरिक व्यथा को निम्न शब्दों में प्रकट किया है-

'अधिकांश प्रेम विवाह अपरिपक्वता, रूप-सौंदर्य, आकर्षण, भावुकता, वासना, फिल्मों की काल्पनिक प्रेम कहानियों से भटक कर कर रहे हैं। कोर्ट में पैसे के बल पर' झूठे

कागज बनवा कर और आर्यसमाज मन्दिर में झूठ बोल कर, गलत ब्यौरा देकर नकली (फर्जी) माता, भाई-बहन दिखा कर रचाते हैं। ऐसा भी देखा गया है कि पिस्तोल की नोक पर गुण्डों ने लड़की का अपहरण किया और आर्यसमाज मंदिर में शादी करा ली। यज्ञशाला में लोग जूते पहने व धूम्रपान करते देखे गए हैं। एक स्थान पर तो कुछ मनचले युवकों ने ऋषि के टंगे चित्र पर शराब के छींटे डालते हुए बकवास कर दी कि बाबा आज तो तुम भी इसका स्वाद ले लो।

परोपकारिणी सभा के पूर्व स्व० प्रधान डॉ० धर्मवीर जी के अनुसार भी 'पैसे के लोभ में अनुचित और अवैध विवाह भी समाजों में हो जाते हैं। गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार विवाह सिद्धांतों का भरपूर दुरुपयोग हो रहा है.....घर से भाग कर आए युवक युवतियों का विवाह अनुचित है।''

आर्य विद्वानों, नेताओं, प्रचारकों को आर्यसमाज को शर्मिन्दा करने वाले इस प्रवाह को रोकने के लिए आर्यसमाज में घुसे अनार्य तत्त्वों को ललकारना चाहिए। सम्भव हो सके तो उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करनी चाहिए। हम यह कहकर बच नहीं सकते कि ''आर्यसमाज अन्तर्जातीय विवाह करवा रहा है और जो समाज ऐसे विवाह करवाते हैं वे प्रतिनिधि सभाओं के अधीन नहीं हैं''। सगोत्र विवाह रोकने के लिए आर्यसमाज निरन्तर प्रचार कर रहा है तो हमारे मन्दिरों में सगोत्र विवाह क्यों हो रहे हैं?

कुछ ऐसे विवाह भी आर्यसमाज मन्दिरों में हुए हैं जो एक गांव के युवक युवतियों के हैं तथा नाबालिगों के व अनमेल विवाह भी हुए हैं।

युवक और युवतियां एक ही गांव और गोत्र के न भी हों तो भी माता पिता की सहमति के बिना विवाह करवाने का ठेका तथाकथित आर्यसमाजों ने क्यों ले रखा है? क्या यह आर्यसमाज का अनिवार्य कर्तव्य है? ऐसा करते हुए वे आर्यसमाज की प्रतिष्ठा को ध्यान में क्यों नहीं रखते और बिना पूरी जाँच किए महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों के विपरीत अनार्य विवाह क्यों करवा रहे हैं? धन के लोभ में धर्म को भूले इन आर्यसमाजों के विरुद्ध सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व प्रान्तीय सभाओं के द्वारा सख्त कार्यवाही की जानी चाहिए तथा उनके लाईसेंस रद्द करवाने के लिए कानूनी कार्यवाही तुरन्त कर्तव्य है। जब आर्यसमाज अन्य मत-मतांतरों और राजनैतिक दलों की पोल चौड़े में खोलता है तो हमारे मन्दिरों में हो रहे इस अनार्य काम को रोकने के लिए आर्यनेता किसकी बाट देख रहे हैं?

अत: आर्यसमाज के सब हितैषी नेताओं से हमारी प्रार्थना है कि आर्यसमाज का अपयश करने वाले इस अनैतिक काम को तत्काल बन्द किया जावे। इसके लिए आर्यसमाज में घुसे अनार्यों का बहिष्कार करना होगा। विनीत निवेदक

धर्मपाल आर्य 'धीर' शास्त्री संस्थापक व मंत्री
आर्यसमाज भाण्डवा मण्डल भिवानी (हर०)

आर्यसमाज की उन्नति के लिए सुझाव

-धर्मपाल आर्य 'धीर' शास्त्री, मन्त्री
आर्यसमाज भाण्डवा (भिवानी)

१. उपनियमों में वर्णित आर्यसभासदों के लक्षणों को सार्थक किया जावे। उक्त परिभाषा के अनुसार आचरण करने वालों को ही सदस्य बनाया जावे। विपरीत आचरण वालों का बहिष्कार हो।

२. आर्यसमाजों में प्रधान व मंत्री आदि के निर्वाचन उपनियमों के अनुसार किये जावें। पुराने समाजों में तत्काल किसी को इन पदों पर आसीन किया जावे, जो पांच वर्ष तक सदस्य रहा हो उसी को उत्तरदायित्व पूर्ण पद सौंपे न जावें।

३. आर्य नामधारियों में पाखण्ड व अन्यान्य अनार्य आचरण बढ़ते जा रहे हैं। इनको रोका जावे। जैसे-मूर्ति पर फूलमाला डालना, शवों पर फूल डालकर उनके आगे हाथ जोड़कर झुकना, शांतियज्ञों के नाम से आयोजित शोक सभाओं में मृत माता पितादिक के चित्रों के सामने फूल डाल, दीपक जलाकर धोक मारना, ब्रह्मभोज नाम धरकर या यज्ञ व प्रचार के व्याज (आश्रय)=माध्यम से मरे हुओं की बरसी-पुण्यतिथि पर लड्डू, हलवा पूरी आदि माल बनाकर खिलाना (काज-अकाज का आधुनिक रूप), विवाहों में भण्डेले नचवाना, गन्दे गानों की कैसेट बजाना, डीजे का भ्रष्ट कार्यक्रम, अंग्रेजी भाषा में गणेश के ऊकचूक चित्र सहित निमन्त्रण पत्र छपवाना, अर्धरात्रि के बाद फेरे होना, अगले दिन देवीधाम पूजा अर्थात् भइयाँ व सती आदि पत्थर पूजा, सोटियों की लड़ाई, मृत्यु प्रसंगों में शोक संवेदना पर पैसे आदि का लेनदेन, आर्य साधुओं का पौराणिक डेरों में रहकर पैर पुजापा करवाना व झाड़े-गण्डे ताबीज देना, वेद पर रुपये चढवाना आदि पाखण्ड, अन्धविश्वास व वेदविरुद्ध पोपलीलायें देखी व सुनी हैं।

४. दयानन्द व नामधारी संस्थाओं में निम्न अनार्य गतिविधियों को सख्ती से निषिद्ध किया जावे, सहशिक्षा, नाच व ड्रामे, टाई आदि विदेशी परिधान, गुडमार्निंग आदि अभिवादन, अण्डों का प्रयोग (गृह विज्ञान की परीक्षा आदि में) जीवित मेंढकों आदि जीवों की चीरफाड़ (मेडिकल कालेजों में संभव है), नकल, समलिंगी मैथुन, मत्स्य-विक्रय, शराब के ठेकेदारों, मादक पदार्थों के व्यापारियों तथा पोल्ट्री फार्मों आदि से तथा तस्करों व जीव हत्यारों से दान प्राप्ति व भोजन व्यवस्था, मृतक श्राद्ध का भोजन (अनाथालय व गुरुकुल तथा आर्य विद्यालयों के छात्र आदि का काज आदि मृतक निमित्त आयोजित भोज) में जीमना इत्यादि फैशन शो (मिस इण्डिया) इत्यादि, व्यक्गित व संस्थागत रूप में

आर्य नाम धरकर तथा संस्थायें भी आर्य नाम रखकर विरुद्ध आचरण करके संस्था को दाग लगा रहे हैं।

५. घोषणा की झूठी लक्ष्यपूर्ति हेतु तथा चुनावों में जीतने के लिए कागजी-नकली (बोगस) आर्यसमाजों की स्थापना न की जावे। इस प्रकार के आपसी संघर्ष में प्रतिनिधि बढ़ाने केलिए अनार्यो के नाम प्रतिनिधि फार्मों में भरकर सदस्य संख्या बढाना, झूठी खानापूर्ति करके बनाये गये समाज कितने दिन चलेंगे और उनसे सत्य धर्म की कितनी रक्षा व प्रचार होगा?

६. सब आर्य अपनी कमाई का दसवां भाग धर्मकार्यों में लगावें। अन्याय से न स्वयं कमावें तथा न अन्यायपूर्वक कमाने वालों से दान लें। यथासम्भव अपने सन्तानों के विवाह सम्बन्ध आर्यों में ही करें।

७. आर्यसमाज के मुख्य लक्ष्य व प्रचार बिन्दु निम्नलिखित विषय हों-कन्या रक्षार्थ भ्रूणहत्या का विरोध, गऊरक्षा, शराबबंदी, शुद्धि। बलात्कार, अपहरण, हत्या, शोषण आदि अन्याय। बढ़ते जा रहे गुरुडम आदि अन्धविश्वासों का विरोध, नकल का विरोध, दूरदर्शन व समाचार पत्रों आदि में अश्लील चित्रों के प्रकाशन का विरोध, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के षड्यन्त्रों का विरोध, विदेशी हानिकारक पेय पदार्थों का बहिष्कार, अन्न, फल, शाक में विषैले प्रक्षेपण का विकल्प देकर जीवन की रक्षा का सन्देश दिया जावे। राष्ट्रभाषा की प्रतिष्ठा, यज्ञ व योग का प्रचार तथा व्यायाम एवं सदाचार प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन।

८. प्राथमिक पाठशाला से लेकर विश्वविद्यालयों तक सब शिक्षण संस्थाओं में वैदिक व्याख्यान कराये जायें, बुद्धिजीवियों, पत्रकारों व राजनेताओं को वैदिक साहित्य भेंट किया जावे। समाचार पत्रों में वैदिक धर्म के सिद्धांतों सम्बन्धी लेख निरंतर छपवाये जायें तथा आकाशवाणी व दूरदर्शन से भी राष्ट्रीय समस्याओं पर आर्यसमाज का दृष्टिकोण प्रसारित करवाया जाना चाहिये।

९. विभिन्न मत के विद्वानों को शास्त्रार्थ के लिये आमन्त्रण हो। यथासमय शास्त्रार्थ के विषय प्रासंगिक हों यथा-
ईश्वर सिद्धि, त्रैतवाद, यज्ञ से पर्यावरण शुद्धि, योग से ईश्वर साक्षात्कार, गोपालन के लाभ, वेदों में शिल्पविद्या आदि सिद्ध करके उक्त ज्ञान को क्रियात्मक रूप देना। गन्थों में प्रक्षेप एवं भ्रष्टइतिहास, शम्बूक वध, राधा-प्रसंग, सीता निष्कासन, द्रौपदी के पांच पति आदि प्रक्षेपों, आर्य बाहर से आये, अकबर महान् था, जाट हूणों के सन्तान हैं, लुटेरे हैं, गुरु गोविन्द सिंह आतंकवादी थे, रामायण व महाभारत कल्पित ग्रन्थ हैं, धर्म अनेक हैं, अद्वैतवाद, नास्तिकता, विकासवाद, वेदों में आर्यदास युद्ध, मद्यपान, व्यभिचार, बलिप्रथा आदि भ्रान्त धारणाओं पर चेलैंज किया जावे। आर्यसामाजिक विवादास्पद विषयों पर भी सर्वसम्मत निर्भ्रान्त निर्णय हों- आर्यसमाज स्थापना दिवस, सृष्टि सम्वत्, वृक्षों में जीव, शरीर में जीवात्मा का स्थान,

वेदभाष्य में हिन्दी महर्षि लिखित है या पण्डितों नें लिखी है इत्यादि विषयों पर आर्य विद्वानों में भी मतैक्य नहीं है। उपर्युक्त विषयों पर लिखी पुस्तकों व लेखों के आधार पर एक-एक विषय पर सर्वांगपूर्ण ग्रन्थ तैयार किये जायें। इतिहासकार पी.एन. ओक के ग्रन्थ इस दिशा में विशेष आदर्श हैं।

१०. प्रत्येक प्रांत में शास्त्रार्थ करने में समर्थ उपदेशक व भजनीक तैयार करने के लिये उपदेशक बिद्यालयों की स्थापना करके धर्मप्रचार का प्रशिक्षण दिया जावे जिसमें सब शास्त्रार्थ महारथियों द्वारा किये गये शास्त्रार्थ तथा सब आर्य भजनोपदेशकों की रचनायें पाठ्यक्रम में हों।

११. ईश्वर, वेद, महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के विरोध में लिखे गये उन सब पुस्तकों तथा लेखों का उत्तर दिया जाये जिसका उत्तर दिया जावे जिनका उत्तर अब प्रकाशित नहीं हुआ है जैसे पं० माधवाचार्य द्वारा लिखित 'क्यों?' आदि पुस्तकें। इस विषय में प्रो०राजेन्द्र जिज्ञासु आदि जागरूक ऋषिभक्त आर्य विद्वान् बहुत ही सराहनीय कार्य कर रहे हैं। हिन्दू मान्यताओं का वैज्ञानिक आधार पुस्तक है जिसमें वैदिक और अवैदिक दोनों प्रकार की मान्यताओं को वैज्ञानिक सिद्ध करने का प्रयास किया गया है। इसी प्रकार की पुस्तकों की नीरक्षीर विवेकपूर्वक समीक्षा की जानी चाहिये। इसके साथ ही समाचार पत्रों में सनाम छपने वाले सत्य विरुद्ध लेखों का उत्तर उन्हीं पत्रों में छपाया जाये।

१२. आर्यसमाज मंदिरों में यज्ञशाला, व्यायामशाला व पुस्तकालयों की स्थापना के साथ साथ, पुरोहित, व्यायाम शिक्षक, भजन मण्डली तथा सेवक की भी अनिवार्यतः नियुक्ति हो। आर्यसमाज मंदिरों में स्कूल न खोले जायें और बारात न ठहराई जायें। यज्ञ, सत्संग व्यायाम शिविर व धर्मप्रचार हों।

१३. आर्यसमाज केलिये समर्पित होकर जीवन होमने वाले प्रचारकों की सुरक्षा व सम्मान हो।

१४. आर्यसमाज में ऋषि निर्दिष्ट विद्यार्य सभा व राजार्य सभा-तीनों की स्थापना हो। आर्ष पाठविधि के गुरुकुल संचालित हों जिनमें महर्षि निर्दिष्ट सर्वांगीण शिक्षक की व्यवस्था हो। स्नातक स्तर तक सबका पाठ्यक्रम समान हो तथा पश्चात् विषयानुसार स्नातकोत्तर विविध शिक्षण, प्रशिक्षण विश्वविद्यालय हों, आर्य सामाजिक विवाद न्यायालयों में न ले जाकर आर्यसामाजिक धर्मार्यसभा निर्णीत करे। आर्य पत्र-पत्रिकाओं में दलगत (विरोधी) आलोचना-प्रत्यालोचना न छापें। सामूहिक रूप से राजनीति में भाग लेने के विषय में सर्वसम्मत निर्णय हो तथा राजार्य सभा की स्थापना होनी चाहिये। यथा राजा तथा प्रजा। धर्म निरपेक्षता के कारण तथा धर्मात्माओं की राजनीति विमुखता के कारण राक्षस छाते जा रहे हैं, पाप बढ़ रहे हैं, धर्म का ह्रास होता जा रहा है।

प्राकृतिक-घरेलु-आयुर्वेदिक-योग उपचार
स्वास्थ्य रक्षा-आर्थिक लाभ-हानिरहित प्राचीन चिकित्सा

-योगाचार्य ओम्प्रकाश मस्करा
मो०9830064143

गैस/वायु समस्या : 'लवण भास्कर' चूर्ण भोजन से पहले जल से लेवें। 8 तुलसी के पत्ते एवं 8 पुदीना के पत्ते को एक गिलास जल में उबाल कर छानकर पीयें। इससे गैस/वायु समस्या तुरन्त दूर होगी। इसे लगातार 2-3 दिनों तक दोनों समय भोजन के बाद पीयें।

दस्त (Loose motion) : 1 चम्मच सौंफ 1 कप जल में उबाल कर आधा कप होने पर पीयें, लाभ होगा। इसबगोल 2 चम्मच, आधा गिलास छाछ के साथ पीयें, लाभ होगा **'चित्रकादि वटी'** की 2-2 गोली प्रात: सायं लेवें लाभ होगा।

अम्लता **(Acidity)** : इस बिमारी से छुटकारा पाने के लिए एक गिलास हरी सब्जियों (तोरी, परवल, लौकी इत्यादि) का जूस बहुत लाभकारी होता है। **'अविपत्तिकारी चूर्ण'** एक चम्मच, जल के साथ लेवें। एसिडिटी में लाभ होगा। प्रतिदिन निम्बू-जल पीयें।

सर्दी-खाँसी : सर्दी-खाँसी से छुटकारा पाने के लिये एक गिलास जल में 1/4 चम्मच हल्दी एवं 4 काली मिर्च उबालकर जल को आधा कप कर लेवें इसके बाद चूल्हे से उतार कर 2 चम्मच गुड़ डालकर जल को छानकर पीयें। (मधुमेह के रोगी गुड़ न डालें) कफ-खाँसी से छुटकारा मिलेगा। **'गोरोचन वटी'** की 2 गोली शहद के साथ सुबह-शाम लेवें। इस प्रयोग को सुबह-शाम दिन में दो बार भोजन के बाद पीयें। गर्म जल पीवें। दो दिन करें, लाभ होगा। **भाप :** गर्म जल में नीलगिरी (सफेदा के पत्ते) को डालकर भाप लेने से सर्दी-खाँसी की समस्या में लाभ होगा।

उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure) : कच्चा प्याज खाने से लाभ मिलता है। हल्के गर्म पानी में थोड़ा नमक डालकर लौकी को धोकर छिलका सहित काटकर मिक्सचर में जूस बनाकर मोटे छेद की छलनी से छानकर 4 तुलसी, 4 पुदीना के पत्ते मिलाकर प्रात: पीयें, तुरन्त कम हो जायेगा। सोडियम नमक बन्द कर सादा सैन्धा नमक लेवें। शवासन करें। स्नान करें।

निम्न रक्तचाप (Low Blood Pressure) बी.पी. कम होने पर गर्म चाय या कॉफी आदि पीने से बढ़ जायेगा 1 चम्मच **अश्वगंधा पावडर** प्रात: नाश्ते के बाद 1 कप गर्म दूध या पानी के साथ लेवें बीपी बढ़ जायेगा। **अर्जुन छाल** चबावें। अर्जुन पावडर

जल या दूध में उबाल कर पीवें। अर्जुनारिष्ट 4 चम्मच प्रात: 4 चम्मच सायं जल के साथ भोजन के बाद सेवन करने से बीपी, हृदय-रोग, कोलेस्ट्रोल, नियमित हो जावेगा। **चेतावनी**-शुगर के रोगी को अर्जुनारिष्ट नहीं लेना चाहिए।

मधुमेह, शुगर (Diabetes) : शुगर के रोगियों को आँवला का जूस, धनिया की चटनी, हरा/पका पपीता, सेब, अनार अमरूद, हरी सब्जी, सूप, सलाद खाना चाहिए। दूध, छाछ और जल पीना लाभकारी होता है। प्रात: 4 किलोमटर टहलना अति आवश्यक है। प्रात: 3 गिलास जल, दोपहर भोजन के बाद गाय की छाछ, रात्रि भोजन के बाद गर्म दूध पीने से पाचन समस्या दूर होगी एवं शरीर स्वस्थ रहेगा।

माईग्रेन : आधा चम्मच राई सेंक कर प्रात: खाने से लाभ होता है। या रात में सोते समय दो बूंद देशी गाय का शुद्ध बिलोया हुआ घी नाक में डालने से माइग्रेन-अनिद्रा-टेंसन समस्या का निदान होता है।

सरदर्द : 5 लौंग पीस कर जल के साथ पेस्ट बनाकर मस्तक पर लगाने से लाभ होगा।

डेंगू/बुखार : बुखार में गिलोय के रस से लाभ होता है। इसके लिये गिलोय 6 इंच टुकड़े को कूट लें और इसे 1 कप रस तैयार कर इसका सेवन खाली पेट सुबह-शाम करें या 2 चम्मच गिलोय पावडर को 3 कप पानी में केवल 2 कप तक रह जाने तक उबालें और ठंडा कर सुबह-शाम नियमित सेवन करें।

होमोग्लाबिन : होमोग्लोबिन कम होने से अनार का सेवन करें। इसका जूस पीने से हृदय मजबूत होगा।

यूरिक एसिड (Uric Acid) : रक्त में यूरिक एसिड के बढ़ने पर गिलोय लता नियमित सेवन करें।

किडनी की समस्या (गुर्दा): "पुनर्नवा आसव" भोजन के बाद लेवें। गाय के दूध को दही से फाड़कर छेने का पानी प्रतिदिन पीयें। जौ की रोटी एवं कुल्थी की दाल का सेवन करें। किडनी रोग में लाभ होगा। **भुट्टा का सूखा बाल :** दो कप जल सूखे भट्टे के बालों को मिलाकर उबालें जब यह एक कप शेष रह जाये तो इस जल को प्रतिदिन नियमित ग्रहण करने से खून में पाये जाने वाले **crealine** कम हो जायेगा। सूजन में भी लाभ मिलता है। पुनर्नवा (जड़ी बूटी) का उपयोग या अर्क-मकोय लेने से भी लाभ होता है। इसे भोजन के बाद लेना चाहिये।

विटामिन डी की कमी : तालमखाना खाने से शरीर में पौष्टिक तत्वों की पूर्ति होती है। इसके नियमित सेवन से विटामिन डी की कमी दूर होगी। **हल्दी :** रात्रि के समय 2 कप दूध में आधे चम्मच हल्दी पाउडर को डालकर

उबालें और सेवन करें इससे पेट के गैस की समस्या का निदान होगा। टूटी हुई हड्डियों को जोड़ने में सहायक होती है। इसके प्रयोग से शरीर में होने वाले संक्रामक रोगों में फायदा होगा। अमेरिका में 400 शोधपत्र अकेले हल्दी पर कैन्सर के लिए ही हुए हैं। प्रात: कच्ची हल्दी खाने से बहुत लाभ होता है।

तिल का तैल : खाद्य तेलों में सर्वश्रेष्ठ है। खिचड़ी, दाल, सब्जी आदि में प्रयोग करें। इससे घुटनों के दर्द, वायु जनित समस्याओं एवं बुढापे में होने वाले रोगों का प्रतिरोध होता है। इसका प्रयोग च्यवनप्राश में होता है। इसमें प्रचुर मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है।

शहद : जंगल का शुद्ध 4 चम्मच शहद प्रतिदिन प्रात: आधा गिलास ठंडे जल में डाल कर ग्रहण करने से वजन घटेगा, खून पतला होगा, हृदय मजबूत होगा, शरीर की प्रतिरोधात्मक शक्ति भी बढ़ेगी।

गौ-मूत्र : कैंसर के रोगी को देशी गाय के प्रात: का पहला गौ-मूत्र फायदा करता है। गौ-मूत्र के सेवन से हृदय का इजेक्शन बढ़ जाता है। प्रात: आधे कप गौमूत्र के साथ 3 चम्मच शहद के साथ सेवन करने से अनेक बिमारियों में लाभकारी दवा है।

गन्ने का रस : गन्ने का रस पाचन-क्रिया में सहायक होता है। इससे शरीर को शक्ति मिलती है और पेशाब सम्बन्धी रोगों में भी लाभ होता है।

नारियल पानी/डाभ : कच्चा नारयिल (डाभ) का पानी ग्रहण करने से पेट सम्बन्धी रोगों में काफी लाभ होता है एवं पाचन क्रिया सुचारु रूप से चलती है। किडनी/पेशाब सम्बन्धी रोगों में भी लाभ होता है, पेशाब का प्रवाह बढ़ता है। डायबिटीज में लाभ होता है।

जल : शरीर को शक्तिशाली बनाने के लिये प्रतिदिन 10 गिलास जल अवश्य पीयें।

सहजन फली : सहजन फली का सब्जी के रूप में व्यवहार करें। यह वात-रोग का नाशक है जैसे जोड़ों का दर्द, घुटनों का दर्द आदि को दूर करता है। इसके पत्तों को कूटकर घुटनों या कमर पर लेप करने से भी दर्द दूर होता है और सूजन भी कम हो जाती है।

टब स्नान : बाथ टब में ठंडे/हल्के गुनगुने पानी में शरीर को खाली पेट नाभी तक डुबो कर आधे घंटे बैठने से पाचन समस्या से छुटकारा होता है। इससे मधुमेह, उच्च रक्तचाप, यकृत्-रोग (लीवर) सम्बन्धी मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में विशेष लाभ होता है।

स्टीम बाथ : स्टीम बाथ करने से शरीर के विकृत पदार्थ (पसीना के रूप में) बाहर निकलते हैं।

०००

साहित्य समीक्षा

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् श्री सोमदेव जी शास्त्री ने अपने तीन ग्रन्थ समीक्षार्थ प्रदान किये हैं-

१. वेदों का दिव्य सन्देश 450/-
हितकारी प्रकाशन समिति हिन्डौन, राज० 9414034072

२. षड्दर्शन समन्वय सन्देश 200/-
परम मानव निर्माण संस्थान सै० 14, रोहतक, हरयाणा-01262-272133

३. वैदिक सन्देश 50/-
शिवराजवती ओंकारनाथ धर्मार्थ न्यास मुम्बई, 9869668130

जो सज्जन पूरा वेदभाष्य और छः शास्त्र खरीदने और पढने में असमर्थ हैं, ऐसे स्वाध्यायप्रेमी जिज्ञासु व्यक्तियों के लिए वेद और दर्शनों में वर्णित विषयों का सामान्य ज्ञान प्राप्त करने हेतु उपर्युक्त ग्रन्थ बहुत सीमा तक लाभप्रद हो सकते हैं।

विद्वान् लेखक ने वेद और दर्शनों का सार तथा वैदिक मान्यताओं को अति सरल भाषा में प्रस्तुत करके पाठकों के लिए वेदादि का स्वाध्याय करने की सुविधा उपलब्ध करा दी है।

आशा है स्वाध्याय प्रेमी महानुभाव अपने ज्ञान में वृद्धि करने हेतु इन ग्रन्थों को पढकर लाभान्वित होंगे। इन ग्रन्थों की रचना हेतु विद्वान् लेखक बधाई के पात्र हैं।

लेखक का सम्पर्क सूत्र-9869668130

निवेदक
विरजानन्द दैवकरणि
९४१६०५५७०२

भजन

तर्ज-आजादी की राह बताई दयानन्द ने

यह हिन्दी भाषा प्यारी तुम इसका आदर मान करो,
देवनागरी भाषा है और संस्कृत की बेटी है,
संस्कृत ईश्वर की वाणी भाषाओं में जेठी है,
अरे दुनिया के नरनारी तुम इसका आदर करो।।1।।
हिन्दी के अड़तालीस अक्षर अपने आप में पूरी है,
इंगलिश और पंजाबी उर्दू भाषा सभी अधूरी हैं,
और लंगड़ी बूची सारी तुम इसका.....।।2।।
सारे देश को जोड़ने वाली आर्य भाषा हिन्दी है,
पूरे अक्षर हिन्दी के हैं छन्द मात्रा बिन्दी है,
आज इस पै संकट भारी तुम इसका.....।।3।।
बच्चा बूढ़ा, अन्धा इसको आसानी से बोल रहे,
मां और ओ३म् निकलता मुख से जब अपन मुंह बोल रहे,
सब घरबारी ब्रह्मचारी तुम इसका.....।।4।।
कोयल तोता मोर पपीहा कौव्वा पक्षीबाज सुनो,
शेर बघेरे बाग में बोलें हाथी का अन्दाज सुनो,
हिन्दी में दें किलकारी तुम उसका.....।।5।।
भारतवासी जोर लगाओ हिन्दी का प्रचार करो,
मातृभाषा है सबकी अपनी माता से प्यार करो,
यूं कहे रामरख प्रचारी तुम इसका.....।।6।।

शोक सन्देश

आर्यसमाज के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, परोपकारी सभा अजमेर के सदस्य, गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के स्नातक पं० सत्यानन्द जी वेदवागीश का २३-१२-२०१९ को निधन हो गया। गुरुकुल झज्जर की ओर से दिवंगत आत्मा की सद्गति और उनके परिवार के सदस्यों के प्रति सहानुभूति प्रकट की गई।

शोक-सम्वेदना

आर्यसमाज के प्रसिद्ध दानवीर, महर्षि दयानन्द सरस्वती, वैदिक धर्म, आर्यसमाज तथा गुरुकुलों के प्रति मन-वचन-कर्म से विशेष आस्था रखने वाले, बीगोपुर (नारनौल, हरियाणा) के मूल निवासी श्री राव हरिश्चन्द्र जी का निधन २४-१२-२०१९ को हो गया। उनकी अन्त्येष्टि २५-१३२-२०१९ को उनके जन्मस्थान में की गई, उस समय सैकड़ों आर्यवीर और श्रद्धालुजन उपस्थित थे।

२७-१२-२०१९ को ग्राम बीगोपुर में उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में स्वामी प्रणवानन्द जी दिल्ली, प्रद्युम्न जी नैष्ठिक हरद्वार, स्वामी रामदेव जी पतञ्जलि योगपीठ हरद्वार, आचार्य अभय देव जी गुरुकुल खानपुर, स्वामी सदानन्द जी दयानन्दमठ दीनानगर पंजाब, महन्त बालकनाथ जी सांसद (अस्थल बोहर रोहतक), हरियाणा सरकार के मन्त्री श्री ओमप्रकाश जी यादव नारनौल, डा० अभय सिंह जी विधायक नांगल चौधरी (नारनौल), डा० यशदेव जी हरद्वार आदि ने राव हरिश्चन्द्र जी के गुणों का बखान करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

अन्त्येष्टि के समय उपर्युक्त अनेक सज्जनो के अतिरिक्त आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर, जीवानन्द जी नैष्ठिक श्री सत्यव्रत शास्त्री नारनौल, सुकामा आचार्या कन्या गुरुकुल रूडकी (रोहतक), पुष्वावती जी आर्योपदेशिका आदि अनेक आर्यसमाजों और ग्रामों के प्रतिष्ठित सज्जन उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि की समाप्ति पर राव साहब के पुत्र श्री यशपाल और महीपाल ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद किया और गुरुकुलों, आर्यसमाजों, गोशालाओं तथा अनाथालयों को श्रद्धासुमन, आर्थिक सहायता भी प्रदान की।

निवेदक :
विरजानन्द दैवकरणि
मो० ९४१६०५५७०२

हर्ष सूचना

गुरुकुल गौतमनगर (दिल्ली) के ८६वें वार्षिक उत्सव के समय गुरुकुल के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने तीन विद्वत्पुरस्कार देकर आर्य विद्वानों का उत्साहवर्धन किया एतदर्थ स्वामी जी तथा पुरस्कार पाने वालों को हार्दिक बधाई।

पुरस्कृत नाम-

१. गुरुकुल झज्जर के स्नातक, पुरालिपि विशेषज्ञ और सुधारक के सम्पादक श्री विरजानन्द दैवकरणि।

२. डा. रवीन्द्र कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर संस्कृत विभाग भगवान्दास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय हरद्वार।

३. डॉ. सुकामा आचार्या विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की (रोहतक) हरयाणा।

प्रत्येक पुरस्कर्ता को २१ हजार रु., प्रशस्ति पत्र, शाल और नारियल देकर स्वामी प्रणवानन्द जी कैप्टन रुद्रसेन जी तथा चौ. मामचन्द तंवर आदि ने पुरस्कृत किया।

-रामपाल शास्त्री, गुरुकुल गौतमनगर

हमारी विशिष्ट औषधियाँ

संजीवनी तैल

यह तैल घाव के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुए घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भरकर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों में और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है।

मूल्य : 100 रुपये

च्यवनप्राश

शास्त्रोक्त विधि से तैयार किया हुआ स्वादिष्ट सुमधुर और दिव्य रसायन (टॉनिक) है। इसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खांसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक तथा सभी हृदयरोगों की उत्तम औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका निरन्तर सेवन समूल नष्ट करता है। निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है। च्यवन ऋषि इसी रसायन के सेवन से जवान होगये थे।

साधारण - 275 रु०, विशेष - 450 रु०, शुगर फ्री - 450 रु०

नेत्रज्योति सुर्मा

सुर्मे तो बाजार में पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं परन्तु इतना लाभप्रद और सस्ता सुर्मा मिलना कठिन है। इसके लगाने से आंखों के सब रोग जैसे आंखों से पानी बहना, खुजली, लाली, जाला, फोला, नजर की कमजोरी आदि विकार दूर होते हैं तथा बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। दुखती आंखों में भी इसका प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है।

मूल्य : 50 रुपये

बलदामृत

हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आजाता है। पीनस (सदा रहनेवाला जुकाम और नजले) की औषधि है। वीर्यवर्धक, कासनाशक, राजयक्ष्मा, श्वास (दमा) के लिए लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करता है तथा अत्यन्त रक्तवर्धक है।

मूल्य : 180 रुपये

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-डॉ० विक्रम सिंह शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।

ओ३म्

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से सम्बद्ध (मान्यता प्राप्त) आर्षपाठविधि के निःशुल्क शिक्षाकेन्द्र

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का

104 वां वार्षिक महोत्सव

दिनांक 22-23 फरवरी 2020 ई०

सभी सज्जनों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी महाशिवरात्रि पर्व पर गुरुकुल का वार्षिक महोत्सव फाल्गुन चतुर्दशी, अमावस्या 2076 वि० तदनुसार 22-23 फरवरी, शनिवार, रविवार को हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है। इस समारोह में आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, साधु-संन्यासी और राज्य सरकार के राजनेता पधार रहे हैं। अतः निवेदन है कि परिवार और इष्टमित्रों सहित पधारकर धर्म का लाभ उठायें तथा महोत्सव की शोभा बढ़ायें।

अथर्ववेदपारायण महायज्ञ

महोत्सव के निमित्त 14 फरवरी शुक्रवार से अथर्ववेदपारायण महायज्ञ प्रारम्भ किया जायेगा। इसके लिए घृत, सामग्री और समिधा का दान आना भी प्रारम्भ हो चुका है। प्राणिमात्र के कल्याणकारी इस पवित्र यज्ञ में घृत, सामग्री, गूगल, समिधा आदि के रूप में आप सभी का सहयोग वांछित है। यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करें जिससे उनकी व्यवस्था की जा सके।

व्यायाम प्रदर्शन

22 फरवरी, शनिवार के दिन गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा विविध प्रकार के भारतीय व्यायामों का प्रदर्शन किया जायेगा जिनमें योगासन, दण्ड-बैठक, जिम्नास्टिक, मल्लखंभ, लाठी, भाला, तलवार, धनुषबाण, लोहे के सरिये को गले से मोड़ना, प्राणायाम और ब्रह्मचर्य के बल से जीप रोकना आदि होंगे।

सूचना : -

1. गुरुकुल की स्वामिनी 'विद्यार्य सभा गुरुकुल झज्जर' का साधारण वार्षिक अधिवेशन 22 फरवरी को रात्रि के 8 बजे प्रारम्भ होगा। सभी सदस्य समय पर पधारें।
2. 2100 रु० वा इससे अधिक दान देने वाले सज्जनों, समाजों और ग्रामों के नाम पत्थर पर अंकित किये जायेंगे।
3. 21000 रु० वा इससे अधिक दान देने वालों के नाम का अलग से पत्थर लगेगा।
4. एक लाख वा इससे अधिक रुपये देने वाले सज्जनों के नाम का अलग से पत्थर तथा चित्र गुरुकुल के प्रमुख स्थल पर लगाया जायेगा।
5. ऋतु अनुकूल वस्त्र, बिस्तर साथ अवश्य लायें। भोजन तथा आवास पर प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से किया जायेगा।

निवेदक

आचार्य विजयपाल	राजवीरसिंह	पूर्णसिंह देशवाल
आचार्य	मन्त्री	प्रधान
9416055044	9811778655	8053178787

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757

पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-

गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103

E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री _____

स्थान _____

डा० _____

जिला _____